आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:06-09-14

पारसनाथ, बबूलनाथ, पतित-पावन बाप ने आज फिरसे हम बच्चों को याद कि यात्रा पर जोर देते हुए कहा, मीठे-मीठे बच्चों, याद की मेहनत तुम सबको करनी है, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूँगा.

हम सब यह तो जानते हैं बाप को याद करना मुश्किल नहीं हैं पर खुद को आत्मा समझना मुश्किल है क्योंकि हमें लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी रहने की आदत पड़ी हुई है. इस लिए मेहनत स्वयं को आत्मा समझने या देही-अभिमानी स्थिति बनाने में ही हैं. अगर हमारी स्थिति आत्मा-अभिमानी है तो बाप कि याद भी सहज ठहर सकेंगी.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं.

एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को युज कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फिल करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये.

ध्यान में रहे कि इस स्वमानो को युज करने से पहले, हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब इस अवस्था में रहकर हम मुरली के कुछ महावाक्यों को हम स्वयं भगवान से सुन रहे है इस अवस्था में उसे पढ़ेंगे.

- बाप भी करते है ओम शांति, यह भी कहते है ओम शांति. बच्चे भी कहते है ओम शांति अर्थात हम आत्माये शांति धाम की निवासी है.

- बाबा फिर ५ हजार वर्स बाद आकर ऐसे ही कहेंगे, मीठे-मीठे रुहानी बच्चों. एक रुहानी बाप ही रुहानी बच्चों को कहते है - एक बार पार्ट बजाया फिर ५ हजार वर्स के बाद पार्ट बजायेंगे क्योंकि फिर तुम सीढ़ी उतरते हो ना.

- बाप बच्चों को समझाते रहते है - शिवबाबा को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनो. स्वर्ग शिवबाबा ने स्थापन किया ना. तो शिवबाबा को और सुखधाम को याद करो.

- बाबा कहते है - है मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो. बाप प्रतिज्ञा करते है - तुम याद करोगे तो पापों से मुक्त कर दूंगा. बाप ही पतित-पावन, सर्वशक्तिमान, वर्ल्ड आल्माइटी आथोरिटी हैं.

- अब बाप कहते है - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. देखो, तुम आत्माओं को ही बाप पढ़ाते है. आत्माओं को ही राज्य मिलता है. आत्माओं ने ही राज्य गँवाया हैं.

- बाप कहते है अब आपस में तुम्हें भाई-बहन भी नहीं, भाई-भाई समझना है. नाम-रुप से भी निकल जाना हैं. बाप भाईओं (आत्माओं) को ही पढ़ाते है.

ॐ शांति.

आपका आत्मा भाई

a.brahmin.soul@gmail.com